

DPN 6323

१. पूजा विधि

PŪJĀ VIDHI

Title: २. स्तोत्र (सौन्दर्य लहरी, विराट, अन्नपूर्णा) STOTRA (SAUNDARYA LAHARĪ
VIRĀṬA, ANNAPURNA)

Run. No. 7014

Cat. No. MS2

Micro. No.

Subject Ritual / Meyama

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21.7 x 9

Folios 36

Lines (in a page) 5-7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator शंकराचार्य / युधिष्ठिर

Scribe / donor

मामदम तुलाधर

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Mandas Tuladhara

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu / १ एलबु

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

20

15

10

5

0

वक्केनीयनकना... निनीयनयसवकमले... निगिनापादनिडा
विक्कासमि... निमयानुदे... निमिवुवना...
रवगी... शा... य... मरुयव... देवन... का... यु
कठिनकवनालो... रया... देका... माद... स...
ल... का... नि... व... नि... शा... नि... सा... ना... युन... न...
सा... ना... यु... शा... यु... नि... यु... मा... वि... को... ल... मन... य... ना...
नि... मन... का... नि... य... न... व... यु... शा... नि... ना... म... य... न... 8... यु... र... वा... ना... मा... हा... य... ना... ना...

0 CMS 5 10 15 20 25 30

अन्तःस्थो मावा मधुकल मया यथा वा गन्तव्यं वसतः सा सता मलय मनु दार्था वने
 नथः ॥ नथः के सर्वं हि मगि निरुर्ग का म विकु या ॥ मया मगि लद्वा ऊ गदि म द
 मने म विजय न ॥ ७ ॥ क ह ल्क श्च द मा क नि क न र क र म न र ना ॥ य नि क्री
 क्ष म स्तु य नि ध न ग न नु व द ना ॥ ध नु क्षि ध न यार्ग म धि म वि द ध ना क न
 न ले ॥ य न स दा क न ॥ य न म थि क न ला य र षि का ॥ १ ॥ स्रु धा सि न ॥ स्रु धा स्रु
 वि द यि वा टी य नि वृ न ॥ म धि क्षी य ना था व व न व नि विं ता म धि गृ ह ॥ गि वा क
 न म र य ॥ न म गि र ज यं क नि न यां ॥ रु ऊ नि लां ध ना ॥ क नि य न रि दान नृ
 ल ह ना ॥ ८ ॥ म ह म ला ॥ अ थ क म यि म गि यू न रु न व हं ॥ डि स्रु धि म न ह

दिं म न मा का गं मू यी न ॥ म ना वि रु म थ क ल म वि रि त्या कु ल य थं ॥ स्रु स्रु
 सा ल य श्र म रु न रु सि व त्या वि रु न सि ॥ १ ॥ स्रु धा अ ना सा र्थ न ध य ग लां न वि
 ग ति न ॥ य यं रं सिं वं ती य न न यी न सा मा य म रु सा ॥ स्रु वा य स्रु र्मि र्मि र्मि
 नि रु म थ रु व ल ॥ य ॥ स्रु मा ला न कृ त्या स्रु वि वि कु ल ऊ धु कु ल नि धि ॥ १० ॥
 य रु र्मि
 नि मू ल य कृ नि रि ॥ य य श्र या नि ग रु स द ल क ला श्र वि व न य र्मि र्मि र्मि र्मि
 सा र्ध न व रु व ल को ध ॥ य नि ॥ ध ना ॥ ११ ॥ य द यं र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि
 र्मि र्मि ॥ क वी द्वा ॥ क ल म क थ म वि वि नि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि र्मि

नंतलनायांतिमंनसा॥ तथाहिर्दुःखायामविगिनिगसायुक्कयंदर्व॥ १२॥ नर्त
 वर्धयांसंनवनविनसंनमसुज्जं॥ नवायागमलाकवतिनमनूअवकिगतगः
 गलक्ष्णवधः कुवकलगविस्तुसिचया॥ १३॥ अरुद्रकोक्षीविगलिनइकुलायव
 नयः॥ १४॥ क्रिगवधक्षेत्रसिधिमधिकयंवागददके॥ रुतागद्विष्टुद्रुनधि
 कयंवागदनिर्ले॥ दिविद्विःवकिंजलनसिद्रुचरुःवष्टिनिनिय॥ मयूखासूयासक
 यनिनवयादामुजयूगं॥ १५॥ जनक्षिप्तासूगंअगियुनजदइदसूकुटी॥ वेनगास
 प्राक्षमृत्तिकगुटिकोवस्तुककनां॥ सहेतुनानयांकेथमिवसताःसंनिदधनःस
 धुकीनडाकासधुनिमधुनागरुनिभूयः॥ १६॥ कविनुनाथनःकमतवनवा

लांगयत्रि॥ रुजकथेसकःकनिविदुष्टमनरवता॥ विनीक्ष्ययस्याःसुव
 लनगजुंगनसहना॥ गतीवागिद्विदधतिमतानंजनसमा॥ १७॥ सवित्रीतिर्वा
 रागिगिगिलारंगिचिद्विर्वगियाद्यातिमूंसहजननिमंविनयनियः॥ स
 कर्काकायाःनंतरवतिमहगारंगिसुरगिबशातिर्वाइवीवदनकमलाभादे
 मधुर्भे॥ १८॥ यदुद्रयातिस्तनरुलननविश्रीगनतिरिद्विंसर्वमेवीमनुषम
 ग्रांसनगियः॥ रचंयस्यदनरुनिषशालीननयना॥ सहाय्यमावय्यःकनिकनि
 न॥ गाद्याक्षगििका॥ १९॥ मरुवैविदंकुलाकुचयूगमधस्तस्यनदक्ष॥ रु
 नार्द्धक्षयंनमलिचिगमनथकला॥ ससद्व॥ २०॥ कालेनयतिर्विना॥

त्वगिलयः ॥ तिलाकीमया ॥ १८ ॥ मयि निनवा इह न युगां ॥ १९ ॥ किं न नीमं ज
 लः किं न धनि कुरु मृग नमं ॥ इति साधकं हिम गिरि गिला मृगि मि
 वयः ससर्वा दयं गमय निशकुना धिय ॥ २० ॥ वृत्त युक्तं दृष्ट ॥ श्रीमद्वय
 निमृध न शिवया ॥ २० ॥ तत्तिलै रत्न न ली गति नयन वध्वन न मयी ॥ न वध्वं वध्वं
 मयै यनिक मलानां नव कलां ॥ महा यद्राट् यो मुदिन मल मायन म धसा ॥ महा
 रुः यथ का दधन यन मा द्वा दल रुयां ॥ २१ ॥ रुवा निव द्वा ॥ मयि दिनु न द
 र्ति मकर ॥ मिति क्ता क्ता वक्र के धुम गिर वा नि त्वमि क्रिय ॥ न क्व वलं न क्
 दि गमि निज सायुक्ष य दयां ॥ मुकुट युक्तं दृष्ट मृग मुकुट नी नाडि नय द्वाः २२ ॥

त्वया हृत्वा वा मव वृत्त य निरुक्त न मन सा ॥ गनी ना द्वां ग मृग यन मयि नं क्द
 नम रुत ॥ न अहि त्वं द्रुयं सकल मरु धा रं गिर न येन क्ता त्वा मान मृकु टि त गजि
 च जस मृकु टं ॥ २३ ॥ ज ग मृग धा ता ह मि नव ति नृद ॥ क्व ये य न ॥ नि न क्ता व र्ति न
 त्वम यिव यनी गति नय ति ॥ सदा मूर्ध ॥ सर्व तदि दम नृ गृह्णा नि रं गिव ॥ म
 वा ॥ दुमा तमा ले य क्ता च ति न या क्ता नि कथा ॥ २४ ॥ प्रमा धं द्वा नां
 गिरु ध न नि ता नां गिरि यम ॥ त्वं लूजा युजा न व व न धा य वि न चि ना ॥ न
 अहि त्वं ला धा द्वा न म धि यी ० स्या नि कटं ॥ मि ना धं न ग ध मृकु लि न क
 भी रु ग मृकु टा ॥ २५ ॥ वि नि चि ० यं व ल्यं व र्ति रु नि ग धा नि वि र्ति ॥ वि ना ग

[illegible][illegible]

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 रुद्रं वधुं सुवेदननिनामा वयं वनाः ॥ ३२ ॥ सनंथानिल क्रीडितं यमि
 दमार्धं तव मेना ॥ निक्षयं कथिनि वधिमला ताग नसिकाः ॥ इयन्ति त्वां
 तिका मधिरु वनिवद्वा कवतयाः गिरा लुभं रुद्रं नः सुन रिद्यु न धा ना रु
 ति शर्म ॥ ३३ ॥ गता न त्वं गता गतिमिहिव वक्रा रुद्रयुगं ॥ नवात्मानं मय
 रुग वतिरुवात्मानमनर्था ॥ श्रुतेः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 मित्रं संवत्सरां समनसं वना न देव नयाः ॥ ३५ ॥ मम न कथं यो मम त्वं मरुद
 सिम नुत्मानं विधेयं ॥ त्वमाय त्वं रुमि त्वयि वनिधनायानं हिय नै
 त्वमं वत्मानं वनिधम विरुं विश्व वयं वा ॥ विदान द्वा कानं गिवः ॥ य

वनित्वा न विदुः ॥ ३५ ॥ नवा क्षा त्र मुले समयया ला मय नया ॥ रुवा
 मानं वदन वनं समदा ता धु यनर्त ॥ उता सा म न त्या मुरु य विधि मुदिधु द
 यथा ॥ सुना था त्वां रुद्रं न कजननी मरु गदिद ॥ ३६ ॥ नव स्वाधि क्षा न रुद्र
 वरु म विधु य नियत ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 केला का द रु नि म रु ता क्षा ध कलि म ॥ दया द्रा या दृष्टि ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 यति ॥ ३१ ॥ नति त्वं नं गत्वा तिमिल यत्रियं धि म न त्वा ना रु न धया ॥ नल धा दृड
 धनु र्यं ॥ नर्धं म म म यं क म वि म धि य र्क ग न र्म ॥ नि र्धं व र्ध न रु न मि हि
 नतः कं रुद्र व र्म ॥ ३७ ॥ समुत्ता ल र्म वि कि म ल म क न र्ध क न सि र्क ॥ रु र्क

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

ल
 ॥ ५५ ॥ लार्गवलां वृत्तिविमलमार्गानि तवयः द्वितीयां तं प्रथमं कृत्वा
 स्वच्छं सकेलं विवेक्यां स्यात् सा इत्यमयि संशयं न मितं ॥ सुखं भवेत्पुनः
 यनिधमतिना काहिमकनः ॥ ५६ ॥ कुर्यात् कुर्यात् किंचिदुवनरुय रं गच्छेत्तिना ॥
 यदीयनगत्वां सधुकनरुचिर्यां धुनगुह ॥ धनं स्यात् सद्यतनकन गृहीतं नति
 पतं ॥ युका ॥ ५७ ॥ चमूगयतिनिगु रानकनमुदै ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ मुने ॥ सद्यतनयनय
 नमकलिकनया ॥ गुण्यामावासेन मूजतिनडना नायकनया ॥ ६० ॥
 याकदृष्टिर्देन बलितलं मां रुज रुचिः समाधुनं स्यादियत्तु निजया
 नंतनयनी ॥ ६१ ॥ विभाता कल्याणा मूट रुचिनाया क्व वलय ॥ ६२ ॥

यां या नाया किं प्रियि मधुना ता गलनिका ॥ अर्वतिदृष्टि विद्वन जन
 विस्मयविजया ॥ कुर्यात् नलत्वा मद्यरुन धेया ग्मा विजयने ॥ ६३ ॥ क
 वीना संदर्श सुवकनर्दे कनसिकं ॥ कदं वयमनकल शिकर्षुय
 गलं ॥ ६४ ॥ मूचर्क दृष्टानव नवन साया दननला ॥ ६५ ॥ स्यात् स मूचर्क दतिक
 नयर्ग किं विदुर्धं ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ जिर्वं ज्ञाना डतिदिनन स ॥ ६८ ॥ श्वकु समन
 वना ॥ सभाखा गं गयानि विमचर्न विस्मयवनी ॥ ६९ ॥ रुना रिता लोना स
 नतिरुः रं रं ता ग्यजननी सखा सुखं ना नं मयिजन निदृष्टिः सकनु

यना चनवाह मवासम करनि याता हिम करः ॥ ११ ॥ अनालं नया लायु
 गलमगना रुच्यननय नक वासा वल्ल कुसुम सत्र की दण्ड कुट्टक ॥ निगञ्जा
 नाय रुच्यवलय थम सु द्रु विल सने यां ज्ञा ज्ञा ज्ञा दधनि ज्ञान संधान विष
 ॥ १२ ॥ मून जी धु ला गय निरुलिन ता टंक यगलं शुक्र शुक्रं मतव मुख
 मिदं ममथ यथ ॥ यमा रुद्र रुद्र रुद्र वनि यथ मर्कट रुद्र रं ॥ मद्रा वी प्रामा नः
 यमथ यनथ स्वतिन वन ॥ १३ ॥ सगथाः मूकी नमृग लहना के गिल लहना ॥
 चिवथा सदा निगुव वध रुद्र कात्या मं विनरी ॥ सवम को नक्ष्त्रा दार विन

निवसः कुं उतंग धा ॥ अलत्कार मं र्येति वर नमार रुद्र ०० वन ॥ १४ ॥
 अर्शाना सावज मूकि नगि निरुल धरु यटि ॥ लदी यान दी यं रुद्र ल रुद्र
 मस्माक मूरि नं ॥ वद नं मु आ गि गि यक न निगु सद्य टि ना ॥ समृद्धा यम
 सांवेदि न चिव मूका मलिधन ॥ १५ ॥ नचि वं र्ये द्वि वय निरुल नला ता द
 लु विनं ॥ रुला मस्मा ला दूक थय निवन लश्न कलया ॥ १६ ॥ स्मि नक्ष्त्रा ज्ञा
 लं नर वदन रुद्रा चिव नां ॥ रका ना धा मा सी दनि न सन या रं रुद्र दिमा ॥ अ
 नक्ष्त्रा नां सा नमृग लहना मगु रुद्र यं चिव न्ना ल रुद्र निगि निरुल रं रुद्र दि

यो॥५३॥ अविष्ठाकायर्थं गुरुजनकथं प्रवृत्तयेत् ॥ अयं यश्च श्रुत्वा न वदनेन नि
 डिक्का जयति सा ॥ यदग्रा तायाः मुटिकद्वयदासु विमयी ॥ वनाकीमादृश्यं क
 लयक कथं ॥ सप्तस्रवायुर्निःसृज्यते निमात्रिकवयुषा ॥५४॥ नक्षत्राणां नवद्वार
 शिखरं कवचिह्नि ॥ निर्वृत्तिवृत्तिं श्रुत्वांशुस्त्रियुगलन निमात्रिचिमुर्विशिष्टं री
 श्वर्यं नः ॥ गङ्गा शकलकयुगलकता ॥ विलियुक्तं मातृवद्वदनं गमलशकला
 ॥५५॥ विद्यं या गमयती विविधमवदानं यशुयते ॥ त्वया न च वरकैललिगवदसा
 सा वरवत् ॥ त्वदर्थमाधुर्यं नयत विनगती कलत्रवा ॥ निजां वीनावाधनीचुल

यं निधातुं न निवृत्तं ॥५६॥ कनाग्रं सृष्टं हिनागिनिधवत्सलनया ॥ गिंन
 णादलं सृष्टं नवनयाना कुलनया ॥ कनया त्वं गिराम्भवसु कुनवृत्तिं गिनि
 मृतं ॥ कथं कां नः ॥ मस्तवयि वृकभाविम्यनहिर्न ॥५७॥ रुद्राग्रं निर्वयुनय
 मयि रुः कंठकवती ॥ गवग्रीवावरुमस्तव कमलनाल गियमिर्यं ॥ मृगल्यना
 काला गुरुवदलदं बालमलिना ॥ मृगलीलानिर्वयुनियदहाहा नतनि ॥
 कां ॥५८॥ गालं त्वं स्वातिमा गतिगमकगार्मकनियुर्ध ॥ विवाहयानद्वयगुण
 र्मः स्वायुगिचुरः ॥ विनाजन्तानामविधमधूननाम कनकवर्णं ॥ रुयाधं गुमासा

स्मिन्निनियमसमीपानं वदन् ॥६॥ मृद्वती मृद्वीनां गवकृत्तलानां च गवहं
वदन्ति सदिश्यं सगसिजकृवस्मिन्निवदन् ॥ नख्यत्यः सगस्य च यथथममदना
नधकनिधा ॥ गुरुर्ध्वीनाः चर्ध्वीनां सगस्य रस्य यथधिया ॥१०॥ नखानां मृद्वीनां
नखनलिनां गवित्तं सतां ॥ कानां नखानि कथय कथयाम कथममी ॥ कया
विद्याताम्यं रजकृविध्या रस्य कर्म ॥ यदि की जल मृद्वीनां गवहं गलतां
नखदल ॥११॥ सगस्य विद्वद्विद्यवदनयौ गवित्तं नयुर्गं नखददलकृत्त
नगं वसुधुनमुद्वै ॥ यदाला वसुधुनं का कृति गवहं यथा सगजनकं वदन् मृद्वीनां

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ अथ भगवत्प्राज्ञावसूतप्रसमाभिरु
 कुरुधा निर्मलस्य ध्यानगयनियगार्कमनसि नः ॥ चिवर्त्तनयि स्मादविनत
 मधुर्गणनसिर्का ॥ कुमात्रावद्याविद्धि नदचदनकोरिदमनी ॥ १३ ॥ हृत्पथ्यवर्त्त
 वनमदनुजकुंठयवृत्तिः ॥ समात्रर्था मुक्तामभितियमला लायलतिकां ॥ क
 र्वांशलग्नविस्वाधनरुचिरित्यम् ॥ सवलितो यवालव्यामिश्रं यनविजयिनः कि
 णिमिवन ॥ १५ ॥ कुशनिर्त्यसद्यस्तुटनद्यटितकुब्जासुरिइभात्कषर्तधाम
 त्कनकमलाशोकलयगां ॥ नवगुणं गुणइदमविलग्नतनुकृवा निध

वक्ष्ये चित्रितं लिनवला चित्रितं वि॥ १॥ नव मन्थ मन्थ धन निधन कन्थ द
यनः ययः यायायानवतिवृत्ति सा न स्रगमीव॥ दयावत्या यरुड वि तसि शुभ
स्वाद्य मरुव॥ क्वीनीया डा नाम ड नि क मनीयः मयि ना॥ १५॥ नन का व द्वा
वलितं लिनवला नन वय्या॥ गरा भन ना हि स न सि कृ न स ग म न सि डः॥ म म रु
म न म्मा द र ल न न य धू म ल निका॥ नन म्मा जानी न न व न न नि भो मा व लि चिय
॥ ११॥ य द न ल्या लिं दी न न न न न न ग कृ ति भि व॥ भि व म ध्या किं चि अ ठि
नि न व द्वा नि म्म धि मा॥ वि म र्द द थ्या न्म कु च क त ग थार न न व र्म॥ न

इंद्रगंधासयनि संपिदनाति कुद्विषा ॥ १७ ॥ मित्राजं गंधर्वः ॥ सुनसुकु
तथासावलितना ॥ कलायात् कुर्णु कुमुससुतनं जारु नकुजः ॥ नैलिना
कारंभक्तिमिति तव नारि निगिति ॥ विनद्वानं सिद्धिनिगनयनानां वि
जयनं ॥ १८ ॥ निसर्गं श्रीलनसुनटनरुप्रध कुमद्विषा ॥ नमसुते नारीव
लिषुगनर्क सुद्यत ॥ १९ ॥ चिरेण मध्यासु सुटितनलिना नां नरुध ॥ स
मावसु सुभारुवरु कुर्णु लैलननय ॥ २० ॥ गुरुत्येवि सारं क्रितिधनयनीः
पार्वतिनिजा ॥ त्रिगंधाद्विद्यं त्ययिन ललनिद्व ॥ नृत्तसुवि कीर्णु गुरुन

यमशब्दां वसुमती ॥ नित सुया गृहानः सुययनितवृत्तं नयनित ॥ ६१ ॥
 कविदुष्कांशुष्कां कनककुदली कोष्ठयटली ॥ मृता यो मृता मृता यम
 विनिद्रितवती ॥ मृदुला यो यथा यथा यथा कुटिला यो जिनिमुने ॥ विजि
 स्तु जानुया विषय कविदुष्कां कनककुदली यम यि ॥ ६२ ॥ यना ऊं रुद्र
 द्विगुधननज कुजिनिमुने ॥ निर्वर्ण्यं द्योत विदुषम विगिश्वा वाठ मकु
 न ॥ यदुत्तदृष्टं दशगियरुता वादयुजली ॥ मृता गृहमानमृता मकु
 टकोष्ठं निरिति ॥ ६३ ॥ गृहानां मृदाता दधनिवर्था शिवनया ॥ म

माया का माग ॥ जिनिदिमया दलित नर्त्त ॥ यथा ॥ या द्रीया द्य ॥ यशुवज्जटा
 रुद्रनटिनी ॥ यथा लाला लला रुद्र रुद्र नरुजान धि रुद्रिः ॥ ६४ ॥ हिमाना
 मृता यद्वि मृता निगता कान् रुद्रि ॥ निगम्योर्दिन द्वा र्ण निगिरवतला
 लाय विमर्श ॥ वने लला वागुगिय मयि मृज को ग मयिनी ॥ मृता र्ण्ये
 त्या द्वा निन निज यत श्रुति मृकि ॥ ६५ ॥ न मा दार्क कृमान यन न मृ
 या यय दया मृवा र्ण्ये द्वा य मृट रुद्रि ने माल कृ कवर्ण ॥ मृत्तु र्ण्ये
 पदलि नन ना य मृत्तु र्ण्ये ॥ यशु नाना गानि ॥ यम दवन र्ण्ये कयिनि

क०॥ ८६॥ मृषा कृत्वा गुरुसुचलन निवर्धलत्र नमिर्न॥ लला नरुर्ल
 नयनभयुर्गली ना जय निर्न॥ शर्मा दह कुन प्रमृमीलित वना
 कृताः कोटि क्रांतिः किल किलित मीश ननिवृष्टा॥ ८७॥ यदंनं का
 लिनां यदमययं दंद विविद्यदां॥ कथनानं सतिः केनिकमण कर्च
 नकुला॥ कथं यादृ त्वां मययमनकालं नृत्तिदा॥ यदाज्ञायय सैव
 दिदयमाननमनसा॥ ८८॥ नर्विना किमुनां कनकमलसंकाचगधि
 ति॥ मनुष्यादिद्यानाहसत ०० वनं रञ्जितन॥ दूला निमः ३

त्यश्चि जलयकेला गुनदधना॥ दनिडं त्वा रुडां श्रियमनिगमकायद
 दर्श॥ ८९॥ कदा कालं मानः कथय कलिनालक कलं स॥ विषयं विद्या
 र्थनवचननिर्नरुलं॥ प्रकृत्वा मूकानामपि रकविना कलसुधन
 या॥ यदाधकं वा या मूरव कमलना मृतनसतां॥ ९०॥ यदयास क्रीजय
 लिचसियसि कावमूनसः श्रमकः नकुलरुवनकल सैमानरुहनि॥ ९१
 विक्रयगिर्कां सुवजमधिसजीवनधिन॥ रुनादा रका रं वन ॥ कमलं
 यात्रनचितं॥ ९२॥ श्रुतालार्कजयु कृति सनमानवहसिर्न॥ शिरीषा

राविमदुषदिवक ॥ नाकुचनं ॥ तनया मध्या पृथग्नसिमाया
 विखय ॥ जगतां कुंठा इयतिकरुणा कारीदनुष्ठा ॥ २२ ॥ पुनस्तानं नं
 पुनमसितनस्तुनयथा ॥ सवयमि यदा सवधकमलानामसुलत ॥ न
 था कृतीनीना जनममस्ताः सिद्धि मनुला ॥ नवद्यानायानः सिद्धि ति नधि
 माद्यातिनमलाः ॥ २३ ॥ गता सुव ॥ इत्युक्ति दानि ॥ २४ ॥ पुनस्तुनाभिय
 शुस्रया द्यतिनकयदः युचुदयदः ॥ त्यांदाः यानां रासां यतिह लित
 रासा रगतया ॥ जतिनीर्ण गानास ॥ २५ ॥ वद ज्ञाग्नि कुरु कं ॥ २६ ॥ याल

कः कसुना न जतिकन विर्वज उमयं ॥ कलारिः कर्षु र्मनकन कन
 निविजितं ॥ जगत्सहा गनयति दिनमिदं रिक कुरु न ॥ विधुवृथा द्रुथा
 निविजयति नूनं नव कुरु ॥ २७ ॥ स्वदाहा दूना द्रुम गतिमला द्याति ना नि
 वधनि ॥ यथा मद्रमिति कसुदाल वयति यः किमा धुर्यत त्रिनयन समुद्रित
 दायना ॥ मद्रा संवर्ण गि विनयति ना ज न विधि ॥ २८ ॥ समुद्र न सु न रु
 नरु न सु र्वरा रुरुति ॥ कवर्क कवर्कः कतिवन कदम्य कतिवयः ॥ न
 नस्य य क कानि न न निजन यनः ॥ समुद्र ल र व त्या यत कः ॥ यनि गधि

^{मि}कुमायसु^म॥१॥ कलत्रं वधुं कनिकानिरुक्तं न कचयः श्रियाध्याः
 कवतियतिः कचयिचनः ॥ महादेवं लिखानवसुतिसुतीनामवनमः ॥ कुवा
 त्यासंसिगः कुनवकनप्रातयसुनर ॥ १७ ॥ गिनानाहृदवाहृदिगृहीणी
 मागसविदाहृप्रवतीयसांरुनससहवनीसदितनया ॥ तुनीयाकायित्येन
 विगमिनिस्मिगसहिमा ॥ महासायविष्णुमयसिवचं वसुसहिषि ॥ १८ ॥ स
 मानोतवह्यामलिविकुनतामस्यनसहि ॥ रयादनगिग्वसुमिनिनकिनला ॥ अ
 निसमृद्धी ॥ द अतिथिद्वकुप्रतिरुलितविग्नकिविंकरं ॥ निनालस्यवद्व

निरुद्धदययकेनुरुमिव ॥ १०० ॥ सनसत्तालस्माविधिदिसवनाविहृन
 म ॥ ननः यानिप्रयथितयतिनभानवद्व्या ॥ चिननूवनीनकुयितयभु
 यागयतिकन ॥ वत्रवस्माहृकनसयतिनसंरुहृरुतवाने ॥ १०१ ॥ निधनित्यम
 अनितवधिगुहनागिनियुह ॥ निनावायपुननियमयनिरिफुकनिल
 य ॥ नियलनिर्मुकेनिरिवलानिगमाकस्मिगियद ॥ निगानंकेनित्यनि
 गमयमयायिमुगिसिमां ॥ १०२ ॥ बुद्धीवद्वालाहृदिदिवसकनणीनाजनवि
 धि ॥ सुमंल्लभ्यदीयलरुतलवचनार्थनवना ॥ स्वकार्यनमूहिः सति

॥ १०३ ॥

20

15

10

5

0

तु निधि साहि त्वरता त्वदायारि वृत्ति सुवज्र न नि विरा मु नि विर्यो ॥ १०३ ॥
॥ ॐ नि ग्रा र्थ क ना रा य वि न वि ना सा ॥ द्य र्थ ल रु नी समा का ॥ ॐ ॥
॥ ॐ न म स्तु नि त्व ना थ य ॥ न दि र दा वि धा नि नी ॥ नि त्व सि धि य दा ता त ॥
स्व ता हा ना र द हि ना ॥ ॐ नि नि त्व ना थ मु नि ॥ स मा प्र न ॥ सि धि त मु ॥

र सि मि र न् आ र्हा ॥ ॐ कृ न रा कि मु र्था ॥ रु र्भ न वि न कि आ र्हा ॥ न द र्भ ना क
आ र्हा ॥ रु र्भ कि आ र्हा ॥ रु र्भ म न् ॐ ॥ रु र्भ कि वा च ॥ वा त ३ रु र्भ कि थि का ना
ॐ रु र्भ ३ रु र्भ लु सि न व ना आ क न र्भ ल ॥ रु र्भ का य रु र्भ का ॥ रु र्भ न न वि चि या न
रु र्भ कि थि या क न स र्भ र्भ ल ता य द रु र्भ रु र्भ लि न य ॥ रु र्भ रु र्भ कि थि र्भ र्भ
रु र्भ रु र्भ लि न या ल रु र्भ रु र्भ ल ॥ रु र्भ रु र्भ का य रु र्भ का ॥ रु र्भ रु र्भ स र्भ र्भ वि चि या रु र्भ रु र्भ
न न रु र्भ य ॥ रु र्भ ल व न रु र्भ का य रु र्भ का ॥ ॐ ॥

CMS 5 10 15 20 25 30

विद्यमान

मानदास सुगत दासया संकलनं
आशा सफु-कथिवात उपहार !

सौन्दर्यलहरी वीरान्त स्तोत्र
भीमपुत्र स्तोत्र

मानदास सुगत दासया संकलनं
आशा सफु-कथिवात उपहार !

स्वस्ति नमः ॥ ह्रीं गङ्गा नित्यं नमः ॥ ह्रीं मत्स्यमाया नमः ॥ ह्रीं कनिष्ठा नमः ॥ ह्रीं ज्ञानामिका
 नमः ॥ ह्रीं कलतलपट्टा नमः ॥ ॐ गि कला यास ॥ ह्रीं रुद्रयाय नमः ॥ ह्रीं निमग्न
 या हा ॥ ह्रीं सिंहा ये वोषट् ॥ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥ ह्रीं नरु याय वोषट् ॥ ह्रीं ज्ञायाय रुद्र ॥
 ॐ गि यत गी यास ॥ रुद्रयाय पूजा ॥ यत गी न ॥ ववन्ना देवि नमः ॥ आवा रुनादि यतम्
 दादस्य ॥ ह्रीं वल्लभ देवि ह्रीं यादकी ॥ लखनराय देव धर्मदाय ॥ ॥ अर्घ्याय व
 गा ॥ अर्घ्याय सताय नमः ॥ ववक्लिमलुलाय नमः ॥ ह्रीं सूर्यमलुनाय नमः ॥ ह्रीं शामः

मलुलाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं ॥ अर्घ्याय रुद्रा निकाये यादकी ॥ यत गी न पूजा ॥ आवा
 रुनादीयानि मलुदास्य ॥ रुद्रमुक्ति ज्ञामयूजा ॥ रुद्रदेवयूजा ॥ विद्रविय ॥ धनदेव
 पूजायाय ॥ ज्ञायादिवाक् ॥ यवामतसना ल ॥ चन्दनसिं धूल ॥ रुद्राय वितयूष्यरा
 रुद्रयूजा ॥ समयकाय न्या नकाय ॥ ॐ गि देवयूजा ॥ ॥ मालनीयतये ॥ यामाय
 लायनाम् ॥ आरव गी स्त्राय लु विनी ॥ सनला कगता देवि ज्ञायार्क ॥ ॐ रुद्रमलु ल
 ॥ ॐ रुद्रावाहि स्त्रावाहयामि ॥ तगा रुद्रदेवयूजा ॥ ह्रीं रुद्रया लाय यादकी ॥ वलि
 ॥ ववद्रुक्ता थय यादकी ॥ वलि ॥ गङ्गा नयतय यादकी ॥ वलि आवा रुनादि दन्त

तर्ङ्गनी गङ्गा मूडाड स्य ॥ ॐ ति ठि द व पू ता ॥ गङ्गा कल म पू ता ॥ भू भान ल क य
 याइ की ॥ अना म नाय याइ की ॥ कना म नाय याइ की ॥ नना म नाय याइ की ॥ यना म
 य याइ की ॥ कसा ल नाय याइ की ॥ कलिका म नाय याइ की ॥ यना म नाय याइ की
 ॥ ध्यान ॥ लुङ्ग रु गि क र्म का ली ठि न र्ज व लु मा लि र्म ॥ वल दार य रु रु र्म मूडा माला
 व र्म रु ली ॥ उ र्म ध्या त्मा म रु द र्म ॐ रु कामा र्थ सिद्ध य ॥ भान य र्म याइ की ॥ ठिया र्म
 ली ॥ ॐ रुं स ४ रुं २ रुं २ रुं र्म य र्म कल म मूत य याइ की ॥ ३ ॥ धन वलि ॥ वरु र्म न य ता ॥
 पूरु न ॥ वृक्ष न न म ॥ विष्णु व न म ॥ नूडा य न म ॥ र्म ग य न म ॥ त मू ना य न म ॥ स न स

तिन म ॥ लम दा व ले न म ॥ न र्म दा य न म ॥ रुडा य न म ॥ र्म ध के न म ॥ को शि की न म ॥ अ
 न ना य न म ॥ वा लु की न म ॥ त क का र्थे न म ॥ क क्रा त का र्थे न म ॥ य म्मा र्थे न म ॥ म
 रु य म्मा र्थे न म ॥ र्म ध या ला र्थे न म ॥ क नि का र्थे न म ॥ व सि ता दि रु क अ धि र्थे न म ॥
 अ दि र्था दि न व रु रु र्थे न म ॥ ॐ द दि द रु ला क या न र्थे न म ॥ अ न्ध ध मा दि न
 रु विल र्म दि वि र्थे न म ॥ दि न र्थे न म ॥ ना ठि र्थे न म ॥ म रु क र्थे न म ॥ कल न र्म
 र्थे न म ॥ व या य न म ॥ मा र्थे न म ॥ य क र्थे न म ॥ स त व न म ॥ न क र्थे न म ॥
 न म ॥ या ग र्थे न म ॥ वा ल र्थे न म ॥ ना सि र्थे न म ॥ अ वा रु ना दि र्थे न म ॥ मूडा ड म

य॥ मूलमणं नखियाकूलि॥ ३ ॥ अर्जुनयूता॥ मूलनवलि॥ ब्राह्मणादीयानि
मूलादस्य॥ ज्ञाय॥ अंरुं सस्यासा॥ १० ॥ स्फाउ॥ नत्ताषष्ठासकलं छिद्यं कलं नयूक्त
हृच्छुण्यपल्लवसूमातिनपुष्पमाता॥ यदुष्मृतागविषयमृतिरिषसस्मातां कृत्वा
मूर्तिरिव न किंयुक्तमाप्ति॥ जूठगंधादि॥ हृत्तिकलस्यूता॥ गताकुरुयूता॥
यप्राप्तताययाइकां सिंहासनाययाइकां॥ धने॥ गकालनं निरादविषयमलाग
समप्रण॥ नृकवकुठिनगारमंदिना नन्दनन्दिता जूष्मदसरूपादविजृम्भित
नकधललि विन्दुकायालमूलादिधमितासिंहादनिष्ठवधत्वायनानिद्य

[illegible]

काय ॥ क्लीं स्वाहा ॥ १० ॥ काठ ॥ लाकारिं धूलवर्णां वक्रसमनिशा, तातिरिं धूलवर्णा
 साक्षदसोत्तरुमिज्जसिखलविधलिर्विइकाया लरुका ॥ सिरुका साम्यउग्रसकनरु
 यप्रदासर्वसिद्धार्थकालि, उला क्यप्रयनिर्यसकलरुयसलंदवदद्यानभासु ॥ अ
 उगीं धादि ॥ ॐ ति कुरुयुता ॥ धनवन्वृतायाय, धनधामभुनयुता ॥ धनयागुदत
 सावृतायाय ॥ द्रुसकयुता ॥ ॐ धूलवर्णां वक्रसमनिशा, तातिरिं धूलवर्णा
 गायनम ॥ वायु, कुरुयुता ॥ नुं ॥ क्लीं धनवन्वृतायाय, धनधामभुनयुता ॥ धनयागुदत
 ॥ सत्यनयुता ॥ नुं ॥ क्लीं शिवाय नम ॥ नुं ॥ क्लीं लुकयनम ॥ ॥ भारतीयुता ॥ वायुवकीरु
 ॥ नुं ॥ क्लीं सां क्लीं क्लीं स्वाहा ॥ समिधसकय ॥ १०

वायुनुं ॥ सत्रिस ॥ सलितय ॥ १० ॥ नेमासनिविश्वमारुता, धदिद्यां रुनस्त्रयया
 मिनमशाने ॥ नौ नौ नुं नुं वक्रा वृथायेनम ॥ यरुन ॥ ने क्लीं ॥ ॐ क्लि सिद्धियाइका ॥
 ने क्लीं ॥ लघिसिद्धियाइका ॥ ने क्लीं ॥ वसिना सिद्धियाइका ॥ ने क्लीं ॥ युकास सिद्धिया
 इका ॥ ने क्लीं ॥ उकिसिद्धियाइका ॥ ने क्लीं ॥ ॐ जित सिद्धियाइका ॥ ने क्लीं ॥ नम सिद्धि
 याइका ॥ ने क्लीं ॥ माका सिद्धियाइका ॥ ने क्लीं ॥ कामप्रद सिद्धियाइका ॥ दलदिग ॥ ने ॥ ॐ
 ॐ ॐ ॐ गकी नीयाइका ॥ ने ॥ नौ नौ नुं नुं गकी नीयाइका ॥ ने ॥ लौ लौ लौ लौ लाकिनि
 याइका ॥ ने ॥ कौ कौ कौ कौ काकी नीयाइका ॥ ने ॥ हां हां हां हां हाकी नीयाइका ॥ ॥

नानावस्त्रवशादिता॥दिव्यवस्तुयल्लिखनादिर्दीर्घकान्तरुचिता॥किंतिगीकू
 ललाकालोक्तयुलमनानीयुता॥नतमालाविविधन,रागमानावर्लविनि॥
 जूसादसकृताकासा,यितवकनतूलसा॥सर्वालीकानर्षयूकातठिकाटिसम
 युरा॥खर्मेननतधवक।वर्गाकूषधलाञ्जुरा॥वनदंठमल्लरुसा।लुलपाण
 छसारिका॥दकिनलकनायता।यथासाहानधल्लुरा॥रुटकाधनरुसुव।
 गदायल्लसुसारिता।यालक्ष्मिर्निरुसु।खद्यागकलवासुकी॥विन्दुमूडा

गथासादि।सिंहासनयनिस्त्रीता॥अधस्त्रियनिलक्ष्मिना।मदिअक्षेमसुसुला
 ॥नमीर्वातिर्गतादेखे।महावल्लयलाकुम॥रुदयतिठिल्लनत।वधुता
 सजिनात्रसा॥प्रर्वधस्त्रिमहादेवि।सर्वकामरुल्लयद॥लखखानुलद
 साव।खद्यागमत्रुमिना॥त्रुववल्गायवल्गाव।वल्गाग्रवल्गुनायिका।वल्गा
 वल्गुवतिवैव।वल्गुत्रयातिवल्गीका॥गवनाजुत्रुल्लकूषु।निगल्लुकावधु
 मिका॥यितावयालुनाक्षया।जुलिधस्त्ररुलिस्त्रिता॥स्यवनिवालसमा

यूक्ता। आयातं ॐ रुमलुल ॥ आनयूयुनम ॥ त्रिया ॐ लि ॥ ७ ॥ नं ॐ
 जं नारुयुदकुं उग्रव ॐ त्रियुमर्दति ॐ ॐ सदाक २ त्वा माई स ॥ मरु
 लयाइकां ॥ ३ ॥ अउ (गैनयूरा ॥ वलि ॥ गयति ॥ ॐ उग्रव ॐ ये विग्नसइ
 मर्द वि ॐ मदि। तनायूडा युवा दया ॥ तस्मायूरुन ॥ ॐ ॐ नूडव ॐ यवा
 इकां ॥ वलि ॥ ॐ ॐ यव ॐ यवाइ कां ॥ वनि ॥ ॐ ॐ यव ॐ यवाइ कां ॥ वनि ॥
 ॐ ॐ यव ॐ नायेवाइ कां ॥ वलि ॥ ॐ ॐ यव ॐ यवाइ कां ॥ वलि ॥ ॐ ॐ यव ॐ वनि

[illegible]

सिरुसनसमात्रम् । महिस्वामयति ॥ अलंकृतयातिनी । क्रो आश्रुत्रिद्या
 तनी ॥ अयमानासुयादवि । सर्वसुकर्यकति । ययाद्यादवतावृत् । कात्यायनित
 भासुते ॥ अनयस्ययाइकां ॥ तियाऊलि ॥ ने ॥ ऊँ स ऊँ मासुइ ॥ अत्रलिकाया
 येतिनम ॥ २ ॥ ऊँ वलि ॥ तमायुन ॥ ने ॥ ऊँ रुया येयाइकां ॥ वली ॥ ऊँ वि
 रुयायेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ अकिनायेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ अयनये
 लाकिनायेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ रुमनायेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ

रुनेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ भासनायेयाइकां ॥ वलि ॥ ने ॥ ऊँ अकषयेयाइ
 कां ॥ वलि ॥ अवाहनादिदि ॥ अमामडादुर्जय ॥ ०० तिया ॥ यनियुता ॥
 ॥ ३ ॥ तताहुवस्थलियुन ॥ ने ॥ आनादिअकषयलिकाजनाययाइकां ॥ ने ॥
 सिरुसनाययाइकां ॥ ने ॥ महिस्वामनाययाइकां ॥ अन ॥ ने ॥ अत्रलियुन
 विनमापीनियुद्याटनि ॥ दादिमियुषसंकार्म ॥ कलस्म ॥ अविचिंतयत् ॥ ॥
 सुवालकालसुकर ॥ दालमायावलीविनि ॥ अकषयलिकाकाका ॥ योनवकतन्
 लुहा ॥ ४ ॥ स्वर्गमकिताधवानी ॥ अकषयलिकाकाका ॥ वली ॥ वली ॥ वली ॥ वली

लवदक्षिणा। रक्तकं लालमल्लय। गङ्गा नीद र्यलधरु ॥ तुमलूना गुलं कार्य ॥
 अत्रयन करुणं ॥ सिंहासनगताद वि। कात्यानी धस्तिन श्वरी ॥ मासामहि जमा
 नृद्य। यथा पादनयं रिली ॥ जूलनमहि साद्याटं। नकम (अतये वय ॥ का अत्र
 यवता निष्कृ। कालान्नयस्तिन श्वरी ॥ वृकान्यामा नृद रुं व। यूरुनीयां महे श्वरी
 ॥ ॥ अयमाता सदा इ (र्ज। नमा मि सर्व धवता ॥ अत्र यूर्य पाइ कां यूरया मि
 नमः ॥ त्रिया श्रे लि ॥ नुं ॥ दूँ ॥ रगवलि श्री वलि कात्यायना कुभ श्वरी नमः ॥
 ३ ॥ ॥ दैवलि गृह ॥ सास ॥ गगा यूरुनी ॥ नुं ॥ अत्र का यनी पाइ कां

॥ वलि ॥ नुं ॥ कं माह श्वरी पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ र्वं कामाली पाइ कां ॥ वलि ॥ ॥
 नुं ॥ ट वं सु वि पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ नं वाला सि पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ यं ॥ दाय
 ली पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ यं याम् लय पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ नं मल लय पाइ कां ॥
 वलि ॥ अवा रु ना दि ति जूल यानि मू डा उ र्ज य ॥ ३ ॥ दि नु वि य ॥ ॥ यूरुनी
 ॥ नुं ॥ नं नं नं नं (मू कल गल श्व ला य पाइ कां ॥ वलि ॥ नुं ॥ नं श्री सिद्धि या गानी या
 पाइ कां ॥ ॥ ली ॥ नुं ॥ नं श्री सिद्धि याम् लय पाइ कां ॥ वलि ॥ ॥ नं नाला क वाल य
 ३ ॥ नुं ॥ श्री की कल यूरु उ व द क ना थ य पाइ कां

[illegible]

ॐ वष्मासनाय वाइ कां ॥ ॐ कर्तुकासनाय वाइ कां ॥ ॐ हिसासनाय वाइ कां ॥
 वरुन ॥ ॐ नृदवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृयवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥
 ॥ ॐ नृनयकाय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय
 वन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ वलि ॥ ॐ नृयाय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय
 वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥
 वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ ॐ नृवन्त्राय वाइ कां ॥ वलि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः कृष्णाय ॥ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 नमः शिवाय ॥ नमः कृष्णाय ॥ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ नमः शिवाय ॥ नमः कृष्णाय ॥ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

नायकं यक्षं कर्षकं नानमस्तु ॥ वासु ॥ वलि ॥ आवाहनादि ॥ धनूयाति
मूडा दुर्लभस्य ॥ ॐ तिष्ठतसि यूता ॥ ॥ रूतसि यूता ॥ ॐ मदिष्ठासु नादि दानव गत्य
हानम ॥ ॐ विष्ठा यनम ॥ ॐ ह्वं दयनम ॥ वलि ॥ आवाहनादि यानी मूडा दुर्लभस्य ॥
ॐ तिष्ठतसि यूता ॥ ॥ तनासु नासु यूरुन ॥ ॐ ॥ इर्मा सायसु काल बाउय २ ह्वं । व
लि ॥ सलि ॥ ॐ ॥ रुवित दयनमस्तु वं गयसु कसायतनम ॥ वलि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ नै ॥ य
लिकाय उयदायनायनम ॥ वलि ॥ लाउ ॥ ॐ ॥ द अयमस्तु पत्रिखत्रुयीनी सर्व

इसुनि वागनायनम॥ वलि ॥ लीवना ॥ नै ॥ अनर्गययल सेन्यरुनायनम ॥
वलि ॥ विनसा नष्टका ॥ नै ॥ विक्का विद्यगयधरुवाहनाययल सेन्यरुनायनम॥
वलि ॥ कस ॥ नै ॥ कालइर्गययल सेन्यरुनायनम॥ वलि ॥ काहाल ॥ नै ॥ मसाहा
त्रविकृतालनाययिगत्रावनायनम॥ वलि ॥ खाति ॥ नै ॥ सिरुनादइर्गययल से
न्यविधं सनायनम॥ वलि ॥ रूतिप्रनाहायना ॥ ॥ नभावलि युयान ॥ नै ॥ जौं जौं कुं

हौं कौं कौं यात्रायवलि गृह २ खाहा ॥ नै ॥ जौं जौं कुं हौं जौं जौं कृत्रयुतवट्टकनाथय
वलि गृह २ खाहा ॥ नै ॥ जौं जौं कुं हौं जौं जौं गूंग ४ कृत्रगलेष्यनायवलि गृह २ खाहा ॥
नै ॥ जौं जौं कुं हौं हौं मसाकलेविष्णुना विद्यगयवलि गृह २ खाहा ॥ नभावउ सर्वियात्रि
वलि ॥ नै ॥ जौं जौं कुं हौं कृयाव विरुयालेवा कृयतीयायलाहिता ॥ नन्दारुहा कृयाहिमा
कलायवाष्टकसु ॥ दिव्यानिमसायानि सिद्धियानि गलेष्यली ॥ साकीलीका

लत्राणवड्ड कनीतिष्णवनी ॥ गरीनाद्याषनिस्सुला, यवनागाउलीमिका ॥ शिषना
 वमहानन्या, कोलाम्खीतयेवव ॥ चिष्णविहसीनीयेव, यकलीधूर्द्धितथा ॥ विष
 रुकसर्वसिद्धि, उरिष्णूकतयेवव ॥ द्वं कालिराश्वनादीर्या, धूमाधिकलरुपि
 या ॥ मातंगाकाकटक्षीच, तथातिवृत्तयानकि ॥ नाकजाधालतार्दव, नकाकीविश्व
 प्रचिनी ॥ रुयंकलित्रोडरुसीष्णुकार्जनलराकनी ॥ विप्ररुडमसकालि, कंकालि
 विकृतानम् ॥ क्कावलारिमरुदाश्व ॥ वाक्काववेषुवीत्रोडीरर्चिकाष्ण्वनीतथा

॥ वात्रासितालसिंहाच, निवड्डितुषकि का ॥ षूर्द्धदद्यामसायानि, वलिगृह्ण
 उमर्धया ॥ जौवउमधियागिष्णवलिगृह्णरुमर्धसानिकरुक्लममसिद्धि
 र्वउरुद्वंरुद्वसाहा ॥ षूर्णितुषमधियागिवलि ॥ ॥ तथासमयवलि ॥
 उंरुमर्धया (अपयाअनि, द्यानायद्यानमवय ॥ कृणायकुरुमर्धसु, सर्वदि
 हाभर्मसिंह ॥ यागानीयागवीनन्दा, सर्वतनुसमागता ॥ षूर्द्धयवर्ममहाचक्र

20
 15
 10
 5
 0
 श्रीना (धवल दो मम॥ यरु का सासन दवी, गुनू या दार्ध नैल ता॥ सर्व सिद्धि य
 साधाम, धवि न र्वी रु व त्सा दा॥ विला ली या गी नी ना व, यष्टि य नि सम फ का, ट्य
 का त व ली द वि, सम या वा ल म न के॥ शु नि स्मृ ति म नू य सि, मां स म दा छि ति वि
 न॥ नि कृ तं य नु इ ष्ठा नां या गी नी ग न र्से क ला॥ कृ णं का दि कृ स य्या नि, १३ नि मि ता
 कृ ता पि ता॥ नि कृ तं य नु इ ष्ठा नां या गी नी ग न र्से क ला॥ ३५ का ण दि कृ य या ध सु
 र्य सा ला य कृ णि ता॥ ३६ अ भि षु र्से द हा, दि सा णु वि दि सा स र्व॥ म हि या ता न

व क्रा लु, सर्व स्ना ना नु ले षु य॥ या गी नी या ग यू का न्मा, स म या ति षु नु सा ध का ४
 ॥ वा ल क र्म सु वी न द्या, स र्व ति षु उ द व ता॥ सि द्धा ण्य यूर का वा र्य सा ध का वि ति
 सा यि ना॥ न ग न वा (ध ग म वा, जू न या सा स नी द न॥ वा या कृ य र वृ क वा, ण न मा
 र्कि म डु ल, ना ना नू य ध ना नि च, य ट जा वि वि धा नि च॥ न कृ स र्व नि र्से उ ष्ठा व लि
 १३ उ स र्व द्या॥ स न र्वा गं भा कृ द नं वा, स र्व भ न र्क ल य दा॥ पा न र्वी उ त्सा य कः
 र्मा, य क्ति वि षा मि य र्क न॥ व लि य र्थ य दा न न, र्से उ ष्ठा म म र्वी न का॥ स र्व क र्मा नि
 सि द्धि नु, स र्व द्या य य सा न य॥ नि व र्ण कि य सा द न, श्री कृ का ना र्क न मा भ द॥ ॥

१७ गणसायनमः॥ गिवगक्राशुकोरुदितवतिनकटवुरविर्नु॥ नरुद्वं
दवामखलुकः॥ यदिनुमवि॥ ननसामनाध्मिदितिरुयादितिनयि॥ वृषनु
सोमं वाके॥ धेमकृत्तव्याः॥ वरुवनि॥ १॥

१८ नमश्चिक्रियि॥ विनाटनगत्रवम्भि॥ यविस्ययुधिसिन्नु॥
मुन्यामनसाधवि॥ इक्ष्मिगिद्वन्धवा॥ युधिसिन्नुववार॥ यसा
दागकुरुना॥ रुनश्चरुगिनायिया॥ नैधेगायकुलजाता॥ मा
गैत्यकुलवर्धना॥ कसविद्रावनकनीजगुना॥ धाकयकवी॥ गि
लाटडचूसंसिक्क॥ आकासवथगमिनी॥ वासुधर्वसुमनाकाध्या
मायाधनीवन्॥ लानावनध्वस॥ यस्मिन्नकिसदाश्रुतं॥ नैव्याना
नययावाना॥ यानातानवदसुनी॥ नानासमश्रुतध्वी॥ सर्व

ॐ ॥ वविर्गयावनासनं ॥ यद्य ० नित नाना ॥ नुरुयं विदुनक
 विन ॥ स्वस्वभवायवा ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 यौनि ॥ साधयिष्यामिवा ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 हिर्ग ॥ वविर्गयावनासनं ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 कलवृद्धिकनरुधत् ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 गृध्निनाशवधत् ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 नवानथवा, नरुधत् ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक

कालयापिनथावद्धा ॥ नानावियमकिंकर्पः ॥ स ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 ग ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 माय ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 धविर्ग ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 नासाय ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 कर्षनधनदृष्टावनासाय ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक
 नभासुर्ग ॥ य ॥ वविर्गयावनासनं ॥ नुरुयं विदुनक

[illegible]

भंगारुसद्वनिं॥सर्वद्वंरुयसुस॥नवजायत्यजा॥ॐनिरुन
यन्नयिसुवसमार्क॥ॐ॥

मीनदास सुगत दासया संकलनं
भाषा सफ-कथियात उपहार !